AEEC

| छन्द शास्त्र |

- छन्द शास्त्र का सामान्य परिचय।
- छन्द कि परम्परा।
- वैदिक छंद → गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप, त्रिष्टुप, जगति, बृहति पंक्ति
- लौकिक छंद → आर्या, अनुष्टुप, वंशस्थ, भुजंगप्रयात, तोटक, स्त्राग्विणी, हरि, गीतिका, विद्युन्माला, वसन्ततिलका, मन्दाक्रान्ता, स्त्रग्धरा, शार्दूलक्रीडित, मालिनी
- छंद के लक्षण एवं उदाहरण।

- छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते
  ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते
  शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतं
  तस्माद् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ॥

- आचार्य पिंगल → पाणिनि के भाई माने जाते है
  ↓
  छन्दः सूत्रम्

- सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत् प्राणान् प्रियान् पाणिनेः।
  छन्दोज्ञाननिधिं जघान मकरो वेलातटे पिङ्गलम् ॥

- √छन्द + असुन प्रत्यय लगने पर 'छन्दस्' शब्द उत्पन्न होता है इसका सामान्य अर्थ है कामना, चाह, वेद, वैदिक सूत्रों का पठन पाठन

- √छद् वेदो का आवरण है इस लिए छिद् का अर्थ आवृत करना अथवा शब्दो को विशिष्ट आवरण मे बाधे रखने वाला छन्द कहलाता है।

- शब्दो को विशिष्ट आवरण मे बाधे रखने वाला छन्द है।

- छन्द ज्ञान के बिना मंत्र उच्चारण पाठ एवं अर्थ ज्ञान सम्भव नही है।

- प्रत्येक सूक्त मे देवता, ऋषि, छन्द का ज्ञान आवश्यक है क्योकि इन तीनो को ही आधार बनाकर मंत्र का पाठ किया जाता है जो ऋषि छन्द और देवता को

एवं इनके विनियोग को जाने →

→ जाने बिना वेद मंत्रों का अध्यन करता है तथा जाप क
है वह पापी सिद्ध होता है

- अविदित्वा ऋषिच्छन्दो दैवतं योगमेव च ।
  योऽध्यापयेज्जपेद्वापि पापीयान् जायते तु सः ।। (बृहद्देवता)

- कात्यायन में सर्वानुक्रमणी 1/1 में कहा है जो व्यक्ति
  छन्द, ऋषि देवता के ज्ञान से हीन होकर मंत्र का
  अध्यन, पाठ आदि करता है उसका प्रत्येक कार्य
  निस्फल सिद्ध हो जाता है

- यो ह वा अविदितार्षेच्छन्दो - दैवत - ब्राह्मणेन
  मन्त्रेण याजयति वा अध्यापयति वा स्थाणुं
  वर्च्छति, गर्तं वा पात्यते या पापीयान् भवति।

- उदात्त → कोई चिन्ह नही
  अनुदात्त → —
  स्वरित → (स्वर) अक्षर के ऊपर खड़ी रेखा ।

- कुछ आचार्यों का मत है कि प्राचीन आस प्रम्परा
  के अनुसार गद्य भी छन्द मे होते थे

निघण्टु
↓
निरुक्त

दुर्गाचार्य के अनुसार छन्द के बिना वाणी उच्चरित
नही होती है

नाच्छन्दसि वागुच्चरति ।

Date : / /
Page No.

- नाटकशास्त्री आचार्य भरत का यह कहना है कि छन्द से रहित शब्दों को स्वीकार नही करना चाहिए

- छन्दोहीनो न शब्दोऽस्ति न छन्दः शब्द वर्जितम् ।

कात्यायन मुनि के ऋग्यजुर्परिशिष्ट के अनुसार वेद मे कोई ऐसा मंत्र नही है जो छन्द के माध्यम से निर्मित नही है इस दृष्टि से गद्यात्मक यजुर्वेद के मंत्र भी छन्दो से रहित नही है।

छन्दोभूतमिदं सर्वं वाङ्मयं स्याद् विजानतः
नाच्छन्दसि ना चापद्यपे शब्दश्चरति कश्चन ॥

- छिन्द् + असुन
छिद्
- वैदिक कोष ग्रंथ मे 'छन्दस्' शब्द छादन और आह्लादन अर्थ में प्रयुक्त हुआ है तैत्तिरीय संहिता और छन्दो उपनिषद् में छन्दस् शब्द का प्रयोग आच्छादन अर्थ मे प्रयोग करते हुए कहा गया है पाप, मृत्यु, भय, दुःख आदि से रक्षा के वे देवगण अपने को आच्छादन कर लेते थे अतः आच्छादन के कारण छन्द को छन्द कहा गया है निरुक्त मे भी छिद् से निष्पन्न छन्दस् शब्द का अभिप्राय आच्छादन या नियमन ही होता है
'छन्दांसि छादनात्'

- काव्य ग्रंथ के प्रसंग में यह आच्छादन रस या भाव का होता है अतः रस या भाव को आच्छादित करने के कारण छन्द को छन्द कहा गया है।

- वैदिक कोष में चदि √चिद् (आह्लादन) से उत्पन्न छन्दस् का अभिप्राय प्रकट करते हुए कहा गया है कि मंत्रा वेद को छन्दस् कहा जाता है क्योंकि सत्य विद्या के ज्ञान के कारण इसके अध्यन से मनुष्य आह्लादित हो जाता है

- शब्दकल्पद्रुम, वाचस्पत्यम् आदि कोष ग्रंथो में भी √चदि से ही छन्दस् शब्द को निष्पन्न बताया गया है शब्दकल्पद्रुम कहता है 'चन्दयति आह्लादयति चन्द्यतेऽनेन वा चन्देरादेश्च छः' सूत्र से √चिद् से चकार को छ हो गया है तथा असुन् प्रत्यय लगाकर छन्दस् शब्द बनता है जो एक नपुंसकलिंग शब्द है जिसका अर्थ है आह्लादित करना या होना अर्थात् छन्दो बद्ध रचना को पढ़ने से पाठक या सहृदय मन आह्लादित हो जाता है।

- वेद के लिए छन्द का प्रयोग उपचार वसाद होने लगा वेदो का बाहरी रूप छन्द बद्ध होने के कारण ऐसा गौण प्रयोग प्राचीन काल में ही दिखाई पड़ता है पाणिनी ने बोल-चाल कि भाषा के लिए भाषा शब्द का प्रयोग किया है वही वैदिक भाषा के लिए छन्दसी शब्द का प्रयोग किया है लौकिक संस्कृत कि दृष्टी से वैदिक संस्कृत के शब्द रूपो में छन्द में नियम का समानतम आभाव है इसलिए छन्दस् शब्द का अर्थ निश्चित अनिश्चित होता है इसी अर्थ में यह शब्द आज-कल बहुधा प्रसिद्ध है।

• वैदिक छन्द कि विशेषता यह होती है कि इसमे अक्षरो कि गणना होती है गुरू और लघु के क्रम पर कोई विचार नही होता है कात्यायन - सर्वानुक्रमणी मे कहा गया है कि जो अक्षर का परिमाण है वह छन्द है (यदक्षर - परिमाणं तच्छन्दः) छन्द शास्त्र मे निश्चित अक्षर के समूह को पाद कर वैदिक छन्दो मे लौकिक छन्दो कि तरह पाद संख्या निश्चित नही होती। यहां कुछ छन्द एक पाद के कुछ दो कुछ तीन कुछ चार पाद के होते है वैदिक छन्दो मे अक्षरो कि संख्या पर विचार किया गया है वेदो मे कुछ ऐसे छन्द है जो केवल अक्षर संख्या पर आधारित है ~~यह~~ ऐसे स्थलो पर पाद के लिए कोई स्थान नही है कभी-2 अन्य पादो के अक्षरो के समसंख्यक होने पर भी एक पाद मे अक्षरो कि संख्या कभी कम हो जाती है कभी अधिक यह नियम बंध ही है एक या एकाधिक अक्षरो का नियुनाधिक होने पर भी छन्द परिवर्तित नही होता हा उनकी संज्ञा परिवर्तित हो जाती है जैसे एक अक्षर ~~कम~~ होने पर उसे निचृत कहते है दो अक्षर कम होने पर विराट कहते है एक अक्षर अधिक होने पर भूरिक कहते है दो अक्षर के अधिक पर स्वराट कहते है यह स्थिति निश्चित अक्षरो मे न्यूनता और अधिकता पर आधारित होती है जैसे गायत्री छन्द 24 अक्षरो का होता है यदि इनमे एक अक्षर कम हो तो उसे निचृत गायत्री दो मे विराट गायत्री कहते है

• ~~आप~~ वैदिक छन्द अक्षर छन्द कहलाते है यहां छंद मुख्यता दो प्रकार का पाया जाता है केवल अक्षर गणनानुसारी दूसरा पादाक्षर गणनानुसारी। —

① प्रथम मे केवल अक्षरो कि संख्या

② द्वितीय मे पाद मे स्थित अक्षरो कि गणना कि जाती है जहां अक्षर से तात्पर्य स्वर से है

• वैदिक छन्द कुछ है इसमे आरम्भ छन्द वेदो मे प्रयोग नही है शेष 26 (21) छन्दो को 5 (3) सप्तको मे विभक्त किया गया है ऋक्प्रातिशाख्य के अनुसार गायत्री पूर्व पंचक छन्दो के नाम है ① मा ② प्रमा ③ प्रतिमा ④ उपमा ⑤ समा (वेदो मे प्रयोग नही)

मा – अक्षर की संख्या	4	
प्रमा –	8	
प्रतिमा –	12	
उपमा	16	
समा	20	3×7 = 21

अन्य ग्रंथो मे इन पंचो का उल्लेख भिन्न-2 नामो से हुआ है नाट्यशास्त्र मे –
① उक्ता ② अत्युक्त ③ मध्यम ④ प्रतिष्ठा ⑤ सुप्रतिष्ठा नाम दिया गया है

<u>प्रथम सप्तक</u> मे आने वाले 7 छन्दो के नाम समान रूप मे मिलते है ये <u>आर्च छन्द</u> कहलाते है यह छन्द है –

① गायत्री – 24
② उष्णिक – 28
③ अनुष्टुप – 32
④ बृहती – 36
⑤ पंक्ति – 40
⑥ त्रिष्टुप – 44
⑦ जगती – 48

द्वितीय सप्तक → मे आने वाले 7 छन्द अति छन्द विख्यात है इसके अन्तर्गत आने वाले छन्द है -

1. अतिजगती → 52
2. शक्वरी → 56
3. अतिशक्वरी → 60
4. अष्टि → 64
5. अत्यष्टि → 68
6. धृति → 72
7. अतिधृति → 76

तृतीय सप्तक → के सात छन्द इस प्रकार है →

1. कृति - 80
2. प्रकृति - 84
3. आकृति - 88
4. विकृति - 92
5. संस्कृति - 96
6. अभिकृति - 100
7. उत्कृति - 104

सप्तको के विभिन्न नाम मिलते है भरत नाट्यशास्त्र मे इसका नाम - 1. दिव्य 2. दिव्येतर 3. दिव्यमानुष प्रथम सप्तक के छन्दो का प्रयोग देवताओ कि स्तुति पर किया जाता है. मनुष्य संबंधी स्तुति के लिए अत्यधिक प्रयुक्त होने के कारण दिव्येतर नाम से जाना जाता है दिव्येतर का अर्थ है देवता से भिन्न अर्थात् मनुष्य, दिव्य तथा मनुष्य दोनो प्रकार से संबंधित होने के कारण तृतीय सप्तक दिव्य मानुष के नाम से जाना जाता है वेदो मे तृतीय सप्तक के छन्दो का भी सर्वथा अभाव देखा

जाता है इस दृष्टी से आरम्भ के पांच और बाद के 7 कुल 12 छन्दो का वेदो मे अभाव होने के कारण कुछ 14 छन्दो का ही वेदो मे प्रयोग मिलता है 14 छन्दो मे भी सर्वाधिक प्रमुख प्रथम सप्तक के छन्द ही है

- भरत के अनुसार काव्य बंध दो प्रकार के होते है
① नियताक्षर बंध ② अनियताक्षर बंध

नियताक्षर बंध से मतलब है ऐसा बंध या ऐसी रचना जिसमें अक्षर नियत हो सुनिश्चित हो बंध के साथ नियत शब्द के प्रयोग से स्पष्ट है कि इसे अक्षरो के स्थान एवं संख्या दोनो के संदर्भ मे उचित मानना चाहिए नियताक्षर बंध को पद्य बंध भी कहते है अक्षरो को एक निश्चित क्रम एवं संख्या मे विन्यस्थीत करने से ~~कुछ बातें~~ ~~सम~~रचना मे विविधता आती है जैसे कि ① संगीतात्मकता ② लयबद्धता ③ सहजप्रभा ④ ये विशेषताएं नियताक्षर बंध रचना मे अपने आप उत्पन्न होती है जिससे रस-पिपासु पाठक कि पद्य के प्रति (रुची) नसाकिक उत्पन्न हो जाती है इसकि अन्य विशेषताए है ① भावो को सक्षम रूप देते हुए उसे पद्यात्मक बनाते है ② गेयता के कारण सरलता से अनुसरन किया जा सकता है

③ मधुरता आकर्षक कि प्रतीति होती है।
④ प्रतिभा का प्रकाशन होता है।
⑤ रस और भाव का प्रकाशन करता है।

Date: / /
Page No.

| लौकिक छन्द |

- छन्दबंध रचना पद्य मे पायी जाती है गद्य मे नही। प्रत्येक पद्य चरणो या पादो मे होते है निश्चित अक्षरो के समूह को पाद कहते है इस प्रकार प्रत्येक पद्य मे अक्षरो का नियतबंध होता है समानतः चार चरण या पाद कहते है प्रत्येक चरण मे वर्णो तथा मात्राओ कि गणना के आधार पर छन्द कि पहचान कि जाती है इस दृष्टी से छन्द दो प्रकार के होते है (1) वर्णिक छन्द (2) मात्रिक छन्द वर्णिक छन्द - ~~को जा~~ वृत के नाम से और मात्रिक कोजाति के नाम से जाना जाता है।

~~मात्रिक छन्द (जाति)~~ →

"पद्यं चतुष्पदं तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा
वृत्तमक्षरसंख्यातं जातिर्मात्राकृता भवेत् ॥ छन्द मंजरी
गंगा दास

(1) मात्रिक छंद → प्रत्येक पाद या चरण कि मात्रा कि गणना के आधार पर जिस छन्द नियमन होता है वह मात्रिक छन्द कहलाता है इस छन्द में प्रत्येक चरण क्रमश मात्रा गणो से युक्त होता है प्रत्येक मात्रा गण मे ~~चार~~ चार-चार मात्राएं होती है मात्रागण 5 है मात्रा से तात्पर्य प्रत्येक चरण मे प्राप्त लघु अर्थात एक मात्रा

लघु - । - 1 ह्रस्व

गुरु - ऽ - 2 दीर्घ

सावित्री देवी गायत्री मंत्र

पांच मात्रा गण निम्नलिखित है

(1) सर्वगुरु SSS + 4

⑦ अन्त्यगुरु ||S
⑧ मध्यगुरु |S|
⑨ आदिगुरु S||
⑩ चतुर्लघु ||||

- मात्रिक छंद के 4 चरणों मे से प्रथम और तृतीय चरण को विषम एवं द्वितीय और चतुर्थ को सम की संज्ञा से अभिहित किया जाता है इससे ही क्रमशः अयुक्त और युक्त । मात्रिक छंद का उदा० - आर्या

- ① स्वर रहित व्यंजन कि गणना नही होती
② गण मे आये हुए लघु और गुरु से तात्पर्य -
  लघु - ह्रस्व
  गुरु - दीर्घ से है
③ लघु स्वर को । संकेत चिह्न से और गुरु को गुरु को S इस चिन्ह से जाना जाता है
④ एक लघु स्वर को ल दो को लौ, एक गुरु ग दो को गौ इंगित किया जाता है

- "वक्ररेखा गुरोश्चिह्न सरला च लघोस्तथा
  गुरुरेखा गकारस्तु लकारो लघुरेकक: ॥"

"सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरु र्भवेत्
वर्ण: संयोगपूर्वश्च तथा पदान्तगोऽपि वा॥

कुछ स्थितियो मे लघु स्वर की गणना दीर्घ स्वर मे होती है ① जब लघु स्वर के बाद अनुस्वार आये या लघु स्वर के बाद विसर्ग आये या कोई संयुक्त व्यंजन आये तब लघु स्वर को दीर्घ के रूप मे

गिना जाता है → मं अनुस्वार
मः विसर्ग
मन्त संयुक्त वर्ण

यहां म लघु स्वर है किन्तु म के बाद क्रमंश अनुस्वार(ं) विसर्ग(:) एवं संयुक्त व्यंजन आने से म को गुरु मे गिना जायेगा।

- पाद के अंत में प्रयुक्त लघु या दीर्घ स्वर कभी-2 छंद कि आवश्कता के अनुसार लघु या दीर्घ मे गिना जाता है।

2. वार्णिक छन्द या वृत

यहां प्रत्येक चरण मे आये हुए वर्णो कि गणना के आधार पर इसका नियमन होता है वार्णिक छन्द तीन प्रकार के होते है - समवृत
अर्धसमवृत
विषमवृत

"समम्मर्धसमं वृत्तं विषमं चेति तात्त्रिधा"

- समवृत → से तात्पर्य है समान वृत वाला अर्थात जिस वृत का चारो चरण समान वर्णो वाला होता है वह समवृत कहलाता है इस प्रकार समवृत छन्द के प्रत्येक चरणो मे वर्णो एव अक्षरो कि संख्या समान होती है संस्कृत साहित्य मे लोकप्रियता एव उपयोगीता कि दृष्टी से यह सर्वाधिक महत्पूर्ण है क्योंकि इसके अंर्तगत प्राय 9 व्यवहार उपयोगी छन्द समाहित है जिसको आधार बनाकर संस्कृत कि रचना कि गई है

वह छंद है -

अनुष्टुप

वसन्ततिलक

वंशस्थ

मन्दाक्रान्ता आदि -

- अर्धसमवृत्त → इस वृत्त का आधा भाग समान होता है यहां चारो चरणो मे से प्रथम एवं तृतीय चरण तथा द्वितीय एवं चतुर्थ चरण मे वर्णों की संख्या समान होते है जैसे - पुष्पिताग्रा

  अपरवक्त्र

  मालभारिणी

- विषमवृत्त → इसके चारो चरण विषम अर्थात भिन्न -2 संख्या वाला होता है → उद्गाता

- वार्णिक छंद को बताने के लिए वार्णिक गण का उल्लेख मिलता है वार्णिक गण 8 है प्रत्येक गण मे तीन-तीन वर्ण परिगणित किये जाते है यहां वर्ण लघु होता है या गुरु होता है। 8 वर्णो का उल्लेख इस प्रकार होता है जिसे सरल श्लोक के द्वारा समझा जा सकता है →

  "आदि - मध्य - अवसानेषु य - र - ता यान्ति लाघवम्
  भ - ज - सा गौरवं यान्ति म-नौ तु गुरुलाघवम्॥"

य - यगण -	ISS	भ - भगण -	SII
र - रगण -	SIS	ज - जगण -	ISI
त - तगण -	SSI	स - सगण -	IIS

म - मगण - SSS
न - नगण - ।।।

- यमाताराजभानसलगा:
  (यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, सगण, लघु, गुरु)

- → मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो आदि गुरु: पुनरादिलघुर्य:
  जो गुरुमध्यगतो रलमध्य: सोऽन्तगुरु: कथितोऽन्तलघुस्त: ॥

- यति - यतिर्जिह्वेष्टविश्रामस्थानं कविभिरुच्यते
  गति - सा विच्छेदविरामाद्या: पदैर्वाच्या निजेच्छया अभिजनकाते

- यति का अर्थ विश्राम विराम आराम ठहरना रोकना विच्छेद विरति (अन्त) होना आदि इस आधार पर यति का अर्थ किया जाता है श्लोक पढते समय छन्द की आवश्यकता के अनुसार श्लोक के प्रत्येक चरण मे जीभ स्वेच्छा पूर्वक जिस-२ समय क्षण भर के लिए विश्राम करती है उसे यति कहते है। विच्छेद, विराम, विरति इसके अन्य नाम है

- गति से तात्पर्य प्रवाह से है अर्थात जब श्लोक को धारा प्रवाह पढा या पढाया जाता है ऐसी स्थिति गति कहलाती है

अनुष्टुप छन्द -1

अनुष्टुप / श्लोक / पद्य → यह एक वर्णिक छन्द है इस छन्द के प्रत्येक चरण मे 8 अक्षर होते है इस दृष्टी से चरणों मे अक्षरो कि संख्या 32 होती है छन्द का लक्षण है - पञ्चमं लघु सर्वत्र

- सप्तमं द्विचतुर्थयोः ।
  षष्ठं गुरु विजानयात्
  एतत् पद्यस्य लक्षणम् ॥

- पञ्चमं लघु सर्वत्र
  सप्तमं द्विचतुर्थयोः ।
  गुरु षष्ठन्तु पादानां
  शेषेष्वनियमो मतः ॥

- श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं
  सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।
  द्विचतुष्पादयोः ह्रस्वं
  सप्तम दीर्घमन्ययोः ॥

- अनुष्टुप छन्द के प्रत्येक चरण का पञ्चम वर्ण सर्वे लघु होता है द्वितीय और चतुर्थ चरण का सप्तम वर्ण भी लघु होता है प्रत्येक चरण का षष्ठ वर्ण गुरु होता है प्रथम एवं तृतीय चरण का सप्तम वर्ण गुरु होता है यह अत्यन्त प्रचलित छन्द है इस छन्द को श्लोक पद्य आदि नामो से भी जाना जाता है।

- उदा० → वागार्थाविव सम्पृक्तौ। वागार्थप्रतिपत्तये
  जगतः पितरौ वन्दे। पार्वतीपरमेश्वरौ ॥

• अनुष्टुप छन्द के इस उदाहरण मे प्रत्येक चरण मे 8 वर्ण दिखाई पड़ते है प्रत्येक चरण का 5 वा वर्ण लघु है द्वितीय एवं चतुर्थ चरण का सप्तम वर्ण भी लघु है प्रथम एवं तृतीय चरण का सप्तम वर्ण दीर्घ है यहां प्रत्येक चरण का षष्ठ वर्ण लघु अत: यह अनुष्टुप छन्द का सुन्दर उदाहरण है

Date: / /
Page No.

वंशस्थ छंद - 2

- इस छन्द के प्रत्येक चरण में बारह वर्ण होते है। प्रत्येक चरण के अन्त में यति का विधान है।

- लक्षण → "जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।" ①
  "जतौ जरौ वंशस्थम्।" ②
  "वदन्ति वंशस्थबिलं जतौ जरौ।" ③

- जिस छंद के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण और रगण हो वहाँ वंशस्थ होता है। इस छन्द के प्रत्येक चरण मे 12 वर्ण होते है।

- उदा० - उभे पितृभ्यो मृगयाप्रसङ्गतः
  IS I,SS I I S I S I S

  कृतापराधो मुनिशापमाप्तवान्
  IS ISS I I S I S I S

  तदा प्रभृत्येव स दारनिस्पृहः
  IS ISSI I S I S I S

  परात्मजानां पितॄणां कथं व्रजेत्॥
  I S I S S I I S I S I S

इस श्लोक के प्रत्येक चरण में 12 वर्ण है तथा यहाँ प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण, रगण स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहे है, अतः यह वंशस्थ छन्द मे है

Date: / /
Page No.

वसन्ततिलका - 3

- इस छन्द के प्रत्येक चरण मे $\overset{14}{}$ वर्ण होते है। यहाँ प्रत्येक चरण में क्रमशः 8 और 6 वर्णों पर यति होती है।

- लक्षण → "उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।"

- जिस छंद के प्रत्येक चरण मे क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण, गुरु, गुरु हो, वहां वसन्ततिलका छंद है।

- उदा० → श्यामो युवा सितदुकूलकृतोत्तरीयः
SS IS IISIISISS

सच्छत्रचामरवरो रचिताङ्गरागः।
SSISIIIS IISISS

श्रीमान् विभूषणमणिद्युतिरञ्जिताङ्गो
SS ISIIISIISISS

नक्षत्रमध्य इव पर्वगतः शशाङ्कः॥
SSISI II SIIS ISS

- इस श्लोक के प्रत्येक चरण में चौदह वर्ण है एवं क्रमशः 8 और 6 वर्णों पर यति हो रही है। प्रत्येक चरण मे क्रमशः तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरु अंत मे दिखाई पड़ रहे है। अतः यहां वसन्ततिलका छन्द है।

शिखरिणी-4

- यह एक वार्णिक छन्द है। इस छन्द के प्रत्येक चरण मे 17 वर्ण होते है। प्रत्येक मे क्रमशः 6 तथा 11 वर्णों पर यति का विधान है।

- लक्षण → "रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी"

- यहाँ रस और रुद्र का विशेष अभिप्राय है। रस छह माने गये है अर्थात षड्रस। इस प्रकार यहां रस 6 संख्या का वाचक है। रुद्र की संख्या 11 है अर्थात रुद्र संख्या का वाचक है। रस 6 और रुद्र 11 दोनो का योग 17 है। साथ ही रस(6) रुद्र(11) क्रमशः प्रत्येक चरण मे यति-भाव भी प्रकट करता है अर्थात प्रत्येक चरण मे 6 और 11 वर्णों पर यति होती है।

इस छंद मे प्रत्येक चरण मे क्रमशः यगण, मगण, नगण, भगण, लघु और गुरु पाया जाता है।

- उदा० → अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-
  ISSS SS IIIIISSIIIS

  रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्।
  ISSSSS II IIISSIIIS

  अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं
  ISSSSS IIII I SSIIIS

  न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः॥
  I SS SSS III IISS II IS

- इस श्लोक के प्रत्येक चरण मे सत्रह वर्ण है। प्रत्येक चरण मे क्रमशः 6 और 11 वर्णों पर यति हो रही है। प्रत्येक चरण मे यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, लघु, गुरु का स्पष्ट क्रम है यहां शिखरिणी छन्द है।

स्रग्धरा - 5

- यह एक वार्णिक छन्द है। इस छन्द के प्रत्येक चरण मे 21 वर्ण होते है। यहाँ प्रत्येक चरण मे क्रमशः 7, 7 और 7 वर्णो पर यति का विधान है।

- लक्षण - "म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम्"।

- यहाँ "त्रिमुनियतियुता" का अर्थ है - त्रिमुनि के यति से युक्तवाली। त्रिमुनि कहने का यह भी अभिप्राय है कि यहां प्रत्येक मुनि अर्थात् प्रत्येक 7 वर्ण पर यति होती है अर्थात् इस छन्द के प्रत्येक चरण मे क्रमशः 7, 7 और 7 पर यति का विधान है।

- इस छन्द के प्रत्येक चरण क्रमशः मगण, रगण, भगण नगण, यगण, यगण और यगण होता है।

उदा० - सोऽयं खड्गः खरांशोरपहसिततनुः स्वैः करैर्नन्दकाख्यः
S S S S ISSIIIIIIS S ISS IS S

सेयं कौमोदकी या सुरारिपुकठिनोरः स्थलक्षोददक्षा।
SS SSIS S IIIIIISS ISSISS

सैषा शार्ङ्गाभिधाना प्रलय : ज्यारवा चापरेखा
SS SS ISS IIIIIISSIS SISS

सोऽयं गम्भीरघोषः शशिकरविशदः शङ्खराट् पाञ्चजन्यः।
S S SSISS IIIIIIS SIS SISS

इस श्लोक के प्रत्येक चरण मे 21 वर्ण है। प्रत्येक चरण में क्रमशः 7, 7 और 7 वर्णो पर यति हो रही है। प्रत्येक चरण मे मगण, रगण, भगण, नगण, यगण, यगण, यगण का स्पष्ट क्रम होने से यहाँ स्रग्धरा छन्द है।

भुजंगप्रयातम् - 6

- यह एक वार्णिक छंद है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं तथा प्रत्येक चरण के अन्त में यति का विधान है।

- लक्षण → "भुजङ्गप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः"
  अर्थात इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः चार यगण रखे जाते हैं → यगण → ISS

- उदा० → क्वचित्कीर्तनं वन्दनं वाऽप्यमुनं
  ISSISSISSISS

  क्वचित्पुष्कलं रम्यपक्षाङ्कुरि गीतम्।
  ISSISSISSISS

  सनृत्यं चतुरशालकं स्वाऽपिरम्यं
  ISSISSISSISS

  विभाति क्वचिच्चारुदीपालिमाला॥
  ISS ISSISSISS

- इस श्लोक के प्रत्येक चरण में 12 वर्ण हैं। प्रत्येक चरण के अंत में यति हो रही है। प्रत्येक चरण में क्रमशः यगण, यगण, यगण, यगण का क्रम स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है। अतः यह श्लोक भुजंगप्रयात छंद में है।

मन्दाक्रान्ता – 7

- यह एक वार्णिक छन्द है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः 17 वर्ण होते हैं। और प्रत्येक चरण में क्रमशः 4 6 अर्थात् 10वें एवं 7वें और 17वें वर्ण पर यति का विधान है।

- लक्षण → "मन्दाक्रान्ता जलधिषडगैर्म्भौ नतौ ताद् गुरू चेत्।
  "मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम्।

- लक्षण से युक्त जलधि षड अग का विशेष अभिप्राय है, यहां जलधि चार संख्या का वाचक है। जलधि का अर्थ समुद्र होता है और समान्यतः समुद्र की 4 संख्या बताई गई है षड या रस 6 छः संख्या का वाचक है। अग का अर्थ पर्वत होता है। अग की संख्या 7 बताई गई है। इस दृष्टि से अग यहां 7 संख्या का वाचक है। यह तीनों संख्याओं का योग 17 होता है जो इस छन्द के प्रत्येक चरण में आने वाले वर्णों की संख्या को व्यक्त करता है। साथ ही चार, 6 और 7 का यह क्रम दिखता है कि इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः चौथे, छठे अर्थात् 10वें और 7वें वर्ण पर यति का विधान है। इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः मगण, भगण, नगण, तगण, तगण, गुरू और गुरू के दर्शन होते हैं।

- उदा० तीव्राघातप्रतिहततरुः स्कन्धलग्नैकदन्तः
  पादाकृष्टव्रततिवलयासङ्गसंजातपाशः।

  मूर्तो विघ्नस्तपस इव नो भिन्नसारङ्गयूथो
  धर्मारण्यं प्रविशति गजः स्यन्दनालोकभीतः।

- इस श्लोक के प्रत्येक चरण में 17 वर्ण है। यहां प्रत्येक चरण मे 4, 6 (10वें) तथा 7 (17वें), वर्ण पर यति हो रही है। प्रत्येक चरण मे क्रमशः मगण, मगण, नगण, तगण, तगण और दो गुरु दिखाई पड़ रहे है अतः यह श्लोक मन्दाक्रान्ता छंद मे है

शार्दूलविक्रीडित – 8

- यह एक वार्णिक छंद है। इस छंद के प्रत्येक चरण मे 19 वर्ण पाए जाते है और प्रत्येक चरण क्रमशः 12 वे और 7 वे (19) वे वर्ण पर यति का विधान किया जाता है।

- छंद का लक्षण → "सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम्"
  (1) सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सगुरवः शार्दूलविक्रीडितम्।

- यहाँ सूर्य और अश्व का विशेष अभिप्राय है। सूर्य कि संख्या बताई गई है। इस दृष्टि से लक्षण मे प्रयुक्त सूर्य संख्या 12 का वाचक है अतः अश्व सात संख्या का वाचक है। 12 और 7 का यह योग इस छन्द के प्रत्येक चरण मे आने वाले 19 वर्णो की संख्या का द्योतक है। साथ ही सूर्य और अश्व का यह क्रम इस बात का बोध करता है कि इस छन्द के प्रत्येक चरण मे सूर्य अर्थात 12 और अश्व अर्थात 7 वे (19) वे वर्ण पर यति का विधान होता है। इस छन्द के प्रत्येक चरण मे क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण और गुरु के दर्शन होते है।

उदा० → यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितबाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः।
पीड्यन्ते गृहिणः कथं न तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः

- इस श्लोक के प्रत्येक चरण मे 19 वर्ण है। प्रत्येक चरण मे क्रमशः 12 वे और 7 वे (19) वे वर्ण पर यति का विधान हो रहा है। प्रत्येक चरण मे क्रमशः मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण और गुरु के स्पष्ट दर्शन हो रहे है। अतः यहा शार्दूलविक्रीडितम् छन्द है

मालिनी छन्द – 9

- यह एक वार्णिक छंद है। इस छन्द के प्रत्येक चरण मे 15 वर्ण होते है तथा प्रत्येक चरण मे क्रमशः 8 वे और 7 वे (15) वर्ण पर यति का विधान किया जाता है।

- लक्षण → "ननमयुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।"

- लक्षण में प्रयुक्त "भोगिलोकै" का विशेष अभिप्राय है। भोगि का अर्थ है नाग। इसकी संख्या 8 बतलाई गई है यह 8 का वाचक है। लोक 7 है अर्थात् यह 7 संख्या का वाचक है। इस दोनो का योग 8+7=15 है जो छन्द के कुल वर्णो कि संख्या है। और 8 और 7 (15) वर्णो पर यति का विधान है।

- इस छंद के प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण, नगण, मगण, यगण और यगण का क्रम स्पष्ट दिखाई पड़ता है

- उदा० → सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं
  मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मी तनोति।
  इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी
  किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्॥

- इस श्लोक के प्रत्येक चरण मे 15 वर्ण है तथा प्रत्येक चरण के 8 वे और 7 वे (15) वर्ण पर यति हो रही है प्रत्येक चरण मे नगण, नगण, मगण, यगण, यगण क्रम स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है। अतः यह मालिनी छंद का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है

इन्द्रवज्रा छन्द -10

- यह एक वार्णिक छंद है। इस छंद के प्रत्येक चरण में वर्ण होते है। प्रथम चरण को छोड़कर शेष तीन चरणों में तगण, तगण, जगण, गुरु और गुरु के दर्शन होते है,

- लक्षण → "स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः"
  अर्थात् इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः तगण, तगण जगण गुरु और गुरु के दर्शन होते है।

- उदा० → अर्थो हि कन्या परकीय एव
  तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।
  जातो ममायं विशदः प्रकामं
  प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥

- इस श्लोक के प्रत्येक चरण मे वर्ण होते है। चरणान्त मे यति हो रही है। प्रत्येक चरण मे क्रमशः तगण, तगण, जगण तथा गुरु की स्पष्ट प्रतीति हो रही है। अत: यह श्लोक इन्द्रवज्रा छंद मे है

उपेन्द्रवज्रा छन्द -॥

- इस छन्द के प्रत्येक चरण मे 11 वर्ण होते है। यहाँ चरण के अंत मे यति का विधान है।

- लक्षण → "उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ।"
  अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण, जगण, गुरु और गुरु हो वहां उपेन्द्रवज्रा छन्द होता है।

- उदा० → उपेत्य नागेन्द्रतरङ्गतीर्णे
  तमार्णे दारुकवर्मदक्षम्।
  विकीर्ण वाणोत्ततरङ्गमङ्गे
  महार्णवाये प्राधि नाययामि॥

- इस श्लोक के प्रत्येक चरण मे 11 वर्ण है तथा प्रत्येक चरण के अंत मे यति हो रही है। प्रत्येक चरण मे जगण, तगण, जगण, गुरु और गुरु का क्रम भी स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है। अतः यह श्लोक उपेन्द्रवज्रा छन्द में है

उपजाति छन्द - 12

- यह एक वार्णिक छन्द है। यह इन्द्रवजा और उपेन्द्रवज्रा का मिश्रित रूप है। स्वाभाविक है कि इस छन्द के प्रत्येक चरण मे वर्ण होते है तथा चरण के अन्त मे यति का विधान है। यहाँ किसी चरण मे इन्द्रवज्रा के तो अन्य मे उपेन्द्रवजा के लक्षण से युक्त पाद के दर्शन होते है। इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवजा का यह समिश्रण 14 प्रकार से संभव है।

- लक्षण → अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ता:।

- इन्द्रवजा और उपेन्द्रवज्रा के लक्षणों से युक्त चरणो वाला उपजाति छन्द है। यहां किसी चरण मे तगण, तगण, जगण अंत मे 2 गुरु के क्रम अर्थात् इन्द्रवज्रा के तो दूसरे या किसी अन्य चरण मे जगण, तगण, जगण, 2 गुरु के क्रम अर्थात् उपेन्द्रवज्रा के लक्षण से युक्त पाद दिखाई पड़ते है। अन्य मिश्रित जातियो अर्थात् जाति छन्दो को भी उपजाति छन्द के नाम से जाना जाता है

- उदा० → अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
  हिमालयो नाम नगाधिराज:
  पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य
  स्थित: पृथिव्या इव मानदण्ड:॥

- इस श्लोक के प्रत्येक चरण में वर्ण है। प्रत्येक चरण के अन्त मे यति हो रही है। प्रथम तथा तृतीय चरण इन्द्रवज्रा तथा दूसरे एवं चतुर्थ चरण मे उपेन्द्रवज्रा अर्थात् इन्द्रवजा और उपेन्द्रवज्रा का सम्मिश्रण दिखाई पड़ रहा है अत: यह श्लोक उपजाति छन्द में है

Date : / /
Page No.

तोटक छन्द — 13

- यह एक वार्णिक छन्द है। इस छन्द के प्रत्येक चरण मे 12 वर्ण होते है तथा चरण के अन्त मे यति का विधान किया जाता है।

- लक्षण → ① तोटकं सः
  ② इह तोटकमम्बुधिसैः प्रथितम्
  ③ यह तोटकमब्धिसकारयुतम्

- लक्षण मे प्रयुक्त अम्बुधि एवं अब्धि का विशेष अभिप्राय है ये शब्द समुद्र का पर्याय है। समुद्र की संख्या 4 बतलाई गई है इस दृष्टि से अम्बुधि या अब्धि चार संख्या का वाचक है। लक्षण का अर्थ है कि यह छन्द तोटक होता है जिसमे समुद्र कि संख्या वाले सगण होते है अर्थात् इस छन्द के प्रत्येक चरण मे सगण, सगण, सगण, और सगण का क्रम दिखाई पड़ता है

- उदा०- यमुनातटच्युतकेलिकलालसदङ्घ्रिसरोरुहसङ्गरुचिम्।
  मुदितोऽटकलेरपनेतुमघं यदि चेच्छसि जन्मनिधं सफलम्।

- इस श्लोक के प्रत्येक चरण मे 12 वर्ण है। चरण के अंत में यति हो रही है। प्रत्येक चरण मे चार सगण का क्रम भी स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है अतः यह श्लोक तोटक छंद मे है।

उदा० यमुनातटमच्युतकेलिकला।
लसदङ्घ्रिसरोरुहसङ्गरुचिम्
मुदितोऽटकलेरपनेतुमघं
यदि चेच्छसि जन्मनिधं सफलं
।। S ।। S ।। S ।। S

| स्रग्विणी छन्द -14 |

- यह एक वार्णिक छन्द है। इस छन्द के प्रत्येक चरण मे 12 वर्ण होते है। प्रत्येक चरण के अंत मे यति का विधान किया जाता है।

- लक्षण → स्रग्विणी र:
  कीर्तितैषा चतूरेफिका स्रग्विणी।
  इस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः चार रगण दिखाई पड़ते है।

- उदा० - इन्द्रनीलोपलेनेव या निर्मिता सप्तकुम्भप्रवालंकृता शोभते।
  नव्यमेघच्छवि: पीतवासा हरेर्मूर्तिरास्तां जयायोरसि स्रग्विणी।

- इस श्लोक के प्रत्येक चरण मे 12 वर्ण है। चरणान्त मे यति हो रही है। प्रत्येक चरण मे क्रमशः चार रगण के दर्शन हो रहे है। अत: यह श्लोक स्रग्विणी छन्द में है।

- नूतनं जीवनं नूतना भारती
  SIS SIS ISI SIS
- नूतनं मंगलं सम्पदो नूतना:
  SIS SIS SIS SIS
- नूतनं संस्कृतं नूतना संस्कृति:
  SIS SIS SIS SIS
- नूतने वत्सरे मातृ या नूतना:
  SIS S S SI S SIS

Date: / /
Page No.

द्रुतविलम्बित छन्द - 15 ×

- यह एक वार्णिक छन्द है। इस छन्द के प्रत्येक चरण मे 12 वर्ण होते है प्रत्येक चरण के अन्त मे यति का विधान है।

- लक्षण → द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ
  अर्थात् इस छन्द के प्रत्येक चरण में नगण, भगण, भगण और रगण का क्रम दिखाई पड़ता है।

- उदा० → अभिमुखे मयि संहृतमीक्षणं।
  हसितमन्यनिमित्त कृतोदयम्।
  विनयवारितवृत्तिरतस्तया।
  न विवृतो मदनो न च संवृतः।।

- इस श्लोक के प्रत्येक चरण मे 12 वर्ण है प्रत्येक चरण के अंत मे यति हो रही है प्रत्येक चरण मे क्रमशः नगण, भगण, भगण और रगण के दर्शन हो रहे है। अतः यह श्लोक द्रुतविलम्बित छन्द में है।

विद्युन्माला छन्द -16

- यह एक वार्णिक छन्द है। प्रत्येक चरण मे चार-चार वर्णो पर यति का विधान है। प्रत्येकचरण मे 8 वर्ण है।

- लक्षण → "विद्युन्माला मौ गौ"।
अर्थात् इस छन्द के प्रत्येक चरण में मगण, मगण, गुरु-गुरु के क्रम स्पष्ट दिखाई पड़ते है

- उदा० → वासोवल्ली विद्युन्माला बर्हश्रेणी शाक्रश्चापः।
यस्मिन् सस्तात तापोच्छित्त्यै: गोमध्यस्थः॥

- इस श्लोक के प्रत्येक चरण मे 8 वर्ण है प्रत्येक चरण में 4-4 वर्णो पर यति हो रही है प्रत्येक चरण में मगण, मगण, गुरु और गुरु का क्रम भी दिखाई पड रहा है अतः यह श्लोक विद्युन्माला छन्द में है।

विद्याऽभ्यासे यैर्यैर्लोके
बाल्यावस्था नीता दैवात्
ते ते धन्या विश्वे मान्या
विद्युन्मालावद् भासन्ते

गीतिका छन्द → 17

- यह एक वार्णिक छन्द है। इस छन्द के प्रत्येक चरण मे 20 वर्ण होते है तथा 5वे 7वे और 8वे अर्थात् 5वे 12वे और 20वे वर्ण पर यति का विधान किया जाता है।

- लक्षण → "सजजा भरौ सलगा सदा कथिता तदा खलु गीतिका"
  इस छन्द के प्रत्येक चरण मे क्रमशः सगण, जगण, जगण, भगण, रगण, सगण, लघु और गुरु दिखाई पड़ते है।

- उदा० → करतालचञ्चलकङ्कणस्वनमिश्रणेन मनोरमा
  रमणीयवेणुनिनादरङ्गिमसङ्गमेन सुखावहा।
  बहुलानुरागनिवासरासरसमुद्भवा भवरागिणां
  विदधौ हरे खलु वल्लवीजनचारुचामर गीतिका॥

- इस श्लोक के प्रत्येक चरण मे 20 वर्ण है तथा प्रत्येक चरण में 5वे 7वे (12वे) और 8वे (20वे) वर्ण पर यति हो रही है। प्रत्येक चरण मे सगण, जगण, जगण भगण, रगण, सगण, लघु और गुरु का क्रम भी दिखाई पड़ रहा है अतः यह श्लोक <u>गीतिका छंद</u> मे है।

आर्या छन्द – 19

- यह एक मात्रिक छन्द है। अतः इस छन्द का परिगणन प्रत्येक चरण मे आने वाली मात्राओं के आधार पर होता है।

- लक्षण → यस्या पादे प्रथमे द्वादशमात्रास्तथा तृतीये ऽपि। अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या॥

- जिस छन्द के प्रथम चरण मे एवं तृतीय चरण मे 12 मात्राएँ होती है, द्वितीय में 18 मात्राएँ तथा चतुर्थ चरण मे 15 मात्राएँ होती है, वहां आर्या छन्द होता है।

- उदा० → आ परितोषाद् विदुषां
  S IIS S IIS — SIISSIIS — 2+1+1+2+2+1+1+2=12

  न साधुमन्ये प्रयोगविज्ञानम्
  I SI SS SSISSS — ISISSISISSS — 1+2+1+2+2+1+2+2+2 =18

  बलवदपि शिक्षितानाम्
  IIIII SISS — IIIIISISS — 1+1+1+1+1+2+1+2+2=12

  आत्मन्यप्रत्ययं चेतः
  SSSSIS SS — SSSSISSS — 2+2+2+2+1+2+2+2=15

- इस श्लोक के प्रथम एवं तृतीय चरण मे 12 मात्राएँ द्वितीय मे 18 मात्राएं एवं चतुर्थ मे 15 मात्राएं दिखाई पड़ रही है। अतः यह श्लोक आर्या छन्द मे है।

वैदिक | गायत्री छन्द |

- प्रथम सप्त (आर्च छन्द वर्ग) सात प्रमुख छन्दों में गायत्री छन्द का प्रथम स्थान है

- समस्त छन्दो का मूल स्रोत गायत्री छन्द है ऐसा कुछ आचार्य मानते है इसका कारण यह है कि अष्टाक्षर से आरम्भ होकर चतुर्विंशति अक्षर रखकर के समस्त छन्द एवं गायत्री छन्द के पूर्ववर्ती मा, प्रमा, प्रतिमा, उपमा, समा आदि सभी छन्द गायत्री छन्द विशेष कहे जाते है तथा इनसे भिन्न छन्द भी गायत्री छन्द के अक्षरो म वृद्धी या कमी करने से ही बनते है गायत्री आदि पूर्ण संख्या को लेकर ही आर्षी छन्द का स्वरूप निर्धारित होने से छन्दो भेद की कल्पना कि जा सकती है 24 अक्षरो वाला गायत्री 28 अक्षरो वाली उष्णिक 32 अक्षरो अनुष्टुप आदि पूर्ण संख्या से युक्त छन्द आर्षी छन्द कहलाते है

- मूल छन्दो कि संख्या में न्यूनाधिक अक्षरो की स्थिति - ए

एक अक्षर कि न्यूनता → निचृद् गायत्री
→ भुरिक
→ विराट
→ स्वराट्

- गायत्री छन्द का लक्षण है → 'गायत्र्या वसवः'
यहां वसु आठ संख्या का वाचक है अर्थात् गायत्री छन्द के प्रत्येक चरण मे आठ अक्षर होते है 'गायत्री च त्रिपदैव" सामान्य गायत्री तीन पाद वाली होती है प्रधानता और प्रचुरता कि दृष्टी से त्रिपदा गायत्री प्रमुख मानी जाती है आठ अक्षरो वाले तीन पादो से युक्त गायत्री →

Date: / /
Page No.

- आर्षी गायत्री कहलाती है इस दृष्टि से गायत्री 24 अक्षरों वाली होती है यद्यपि पादानुआर्षी गायत्री छन्द के कहीं पर एक पाद कहीं दो कहीं तीन एवं कहीं चार पाद से युक्त हुआ करती है किन्तु गायत्री छन्द त्रिपाद से भिन्न नहीं हुआ करती है ऐसा माना जाता है

"एकद्वित्रिचतुष्पादुक्तपादम्"

- आद्यं चतुष्पादृतुभिः - अर्थात छः अक्षरों वाला मतलब यह है कि चार पाद युक्त छः अक्षरों वाला गायत्री छंद भी प्रचलित दिखाई पड़ता है ऋक्प्रातिशाख्य में कहा गया है कि "गायत्री सा चतुर्विंशत्यक्षरा

अष्टाक्षरस्त्रयः पादाश्चत्वारो वा षडक्षराः॥

अर्थात गायत्री छंद में कुल 24 अक्षर देखे जाते हैं या प्राप्त होते हैं किसी-किसी मंत्र में 8-8 अक्षरों वाले तीन पाद तथा कहीं-कहीं छः-छः अक्षरों के 4 पाद होते हैं

- पूर्व में गायत्री आदि शब्दस्तवित छन्दों में से प्रत्येक छन्द दैव, आसुरी, प्राजापत्या, आर्षी, याजुषी साम्नी आर्ची एवं ब्राह्मी भेद से अष्टविध भेद बताये गये हैं यहां यह विचार केवल अक्षर संख्या पर आधारित था किंतु कालान्तर में वर्णन विस्तार के भय से इनको छोड़ दिया गया आर्षी गायत्री आदि के प्रसंग में इनको देख सकते हैं

देव	–	1
आसुर	–	15
प्राजापत्या	–	8
आर्ष	–	24
याजुष	–	6
साम	–	12
आर्च	–	18
ब्राह्म	–	36

- गायत्री के अवान्तर अवान्तर भेद- यहां प्रथ 26 भेदों कि चर्चा हुई है

	अवान्तर-भेद	वर्ण संख्या	पाद
1.	आर्षी	24	8+8+8
2.	पादनिचृत्	21	7+7+7
3.	अतिपादनिचृत्	21	6+8+7
4.	अतिनिचृत्	20	7+6+7

Date: / /
Page No.

उदा० अग्निमीळे पुरोहितम यज्ञस्य देवमृत्विजम ।
होतारं रत्नधातमम ॥

इस मंत्र के प्रत्येक चरण मे 8-8 वर्ण है यह मंत्र तीन पादो से युक्त है तीनो पादो मे अक्षरो कि कुल संख्या 24 है अत: यह मंत्र गायत्री छन्द मे है

Date : / /
Page No.

[वैदिक छन्द परिचय] [लक्षण - सहित / उदाहरण - सहित]

- ~~गाउअन्याज~~ (गाउअनृपांगीज)

* [गायत्र्या वसवः]

- वेद और लौकिक छन्द में गायत्र्याः = गायत्री छन्द का एक पाद वसवः = आठ अक्षर का होता है। उदाहरण →

अग्निमीळे पुरोहितम् = 8 (ऋ 1/1) 8 × 3 = 24

- आठ वसु प्रसिद्ध है। वे थे है → पृथिवी (1), जल (2), अग्नि (3), वायु (4), आकाश (5), चन्द्रमा (6), सूर्य (7), नक्षत्र (8)। इसलिये इस शास्त्र में प्रायशः संख्यावाची एक, द्वि, त्रि आदि शब्द न कहकर संख्यावाची लोक प्रसिद्ध उन वस्तुओं का नाम लिखने की परम्परा है।

* [उष्णिग्गायत्रौ जागतश्च]

- जिस छन्द के प्रथम - द्वितीय पाद गायत्रौ = गायत्र = आठ - आठ अक्षरों से युक्त हों च = तथा तिसरा पाद जागतः = बारह (12) अक्षरों का हो वह छन्द उष्णिक् कहलाता है। उदाहरण →

पस्य देवीवीतये। = 8
इन्द्रो धाराभिरोजसा। = 8
आ कलशं मधुमान्सोम नः सदः ॥ = 12

8 + 8 + 12 = 28

* [अनुष्टुब् गायत्र्यः]

- गायत्र्यः = आठ-आठ अक्षरोंवाले चार पादों से युक्त बत्तीस (32) अक्षरवाला छन्द अनुष्टुप् कहलाता है। उदाहरण→

ततो विराडजायत विराजोऽअधि पूरुषः।
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः॥
(यजुः- 31.5)

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥

8×4 = 32

* [बृहती जागतस्त्रयश्च गायत्राः]

- जिस छन्द में प्रथम पाद जागतः = जागत = 12 अक्षरों का च = और द्वि०, तृ०, च० थे त्रयः = तीन पाद गायत्राः = गायत्र = आठ-आठ अक्षरोंवाले हों वह 36 अक्षरों से युक्त छन्द बृहती नामवाला होता है। उदाहरण→

इन्द्रं धनस्य सातये हवामहे
जेतारमपराजितम्।
स नः स्वर्षदति द्विषः
स नः स्वर्षदति द्विष

12+8+8+8 = 36

Date: / /
Page No.

* [पङ्क्तिर्जागतौ गायत्रौ च]

- जिस छन्द के प्रथम, द्वितीय पाद जागतौ = 12-12 अक्षरों से युक्त हों च = और तृतीय - चतुर्थपाद गायत्रौ → 8-8 अक्षरोंवाले हों, उस छन्द का नाम पङ्क्ति = पङ्क्ति = जानना चाहिए। उदाहरण →

उपयामगृहीतोऽसि शण्डाय त्वै- =12
ष ते योनिर्वीरतां पाह्यपमृष्टः =12
शण्डो देवास्त्वा शुक्रपाः =8
~~प्रणयन्त्वधृष्टाऽसि~~ ।। =8
प्रणयन्त्वनाधृष्टाऽसि

12+12+8+8=40

[त्रिष्टुभो रुद्राः]

- त्रिष्टुभः = त्रिष्टुप् छन्द का एक पाद रुद्राः = ग्यारह (11) अक्षर का होता है। उदाहरण →

सं मातृभिर्न शिशुर्वावशानो, =11
वृषा दधन्वे पुरुवारो अद्भिः। =11
मर्यो न योषामभि निष्कृतं य- =11
न्स गच्छते कलश उस्रियाभिः। =11

11×4 = 44

ग्यारह रुद्र प्रसिद्ध है। जैसे → दश प्राण - प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त, धनञ्जय और ।। वाँ जीवात्मा।

- हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे
भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां ~~कस्मै देव~~
कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।इति।।

Date: / /
Page No.

[जगत्या आदित्याः]

- जगत्याः = जगती छन्द का एक पाद आदित्याः = 12 अक्षरों का होता है। उदाहरण →

12 इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं = 12
विश्वजिद्धनजिदुच्यते बृहत् । = 12
विश्वभ्राड् भ्राजो महि सूर्यो दृशे = 12
उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम् = 12

$12 \times 4 = 48$

[वैदिकछन्द के देवता]

छन्द		देवता		स्वर		
गायत्री	→	अग्नि	→	षड्जः	→	एकश्रुति
उष्णिक्	→	सविता	→	ऋषभः	→	अनुदात्ततर (तीव्र) (कोमल)
अनुष्टुप	→	सोम	→	गान्धारः	→	उदात्त (कोमल)
बृहती	→	बृहती (बृहस्पति)	→	मध्यमः	→	स्वरित
पङ्क्ति	→	वरुण	→	पञ्चमः	→	स्वरितोदात्त
त्रिष्टुप	→	इन्द्र	→	धैवतः	→	अनुदात्त (तीव्र)
जगती	→	विश्वेदेवाः	→	निषादः	→	उदात्ततर (कोमल)

छन्दः	गायत्री	उष्णिक्	अनुष्टुप्	बृहती	पङ्क्ति	त्रिष्टुप	जगती
देवता	अग्नि	सविता	सोमः	बृहस्पति:	वरुण	इन्द्रः	विश्वेदेवा
स्वरः	षड्जः	ऋषभः	गान्धारः	मध्यमः	पञ्चमः	धैवतः	निषाद
वर्णः	शुक्लः	कपिशः	पीतः	कृष्णः	नीलः	रक्तः	गौरः
गोत्र	आग्निवेश्यः	काश्यपः	गौतमः	आङ्गिरस	भार्गव	कौशिक	वासिष्ठ